SHUBHRA RANJAN

Always Ahead

2

# राजनीतिक सिद्धांत एवं विचारधाराएँ

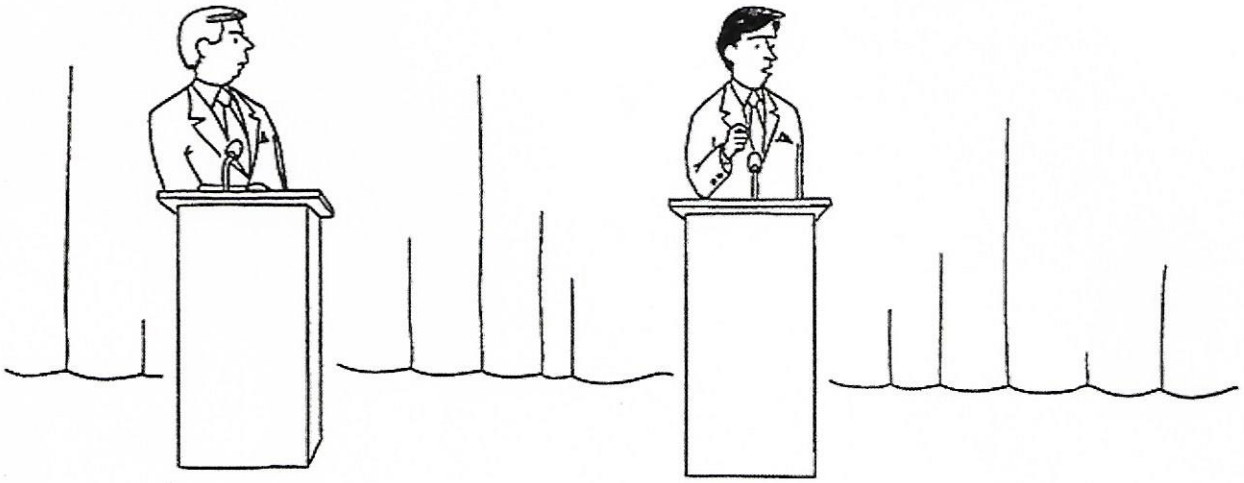

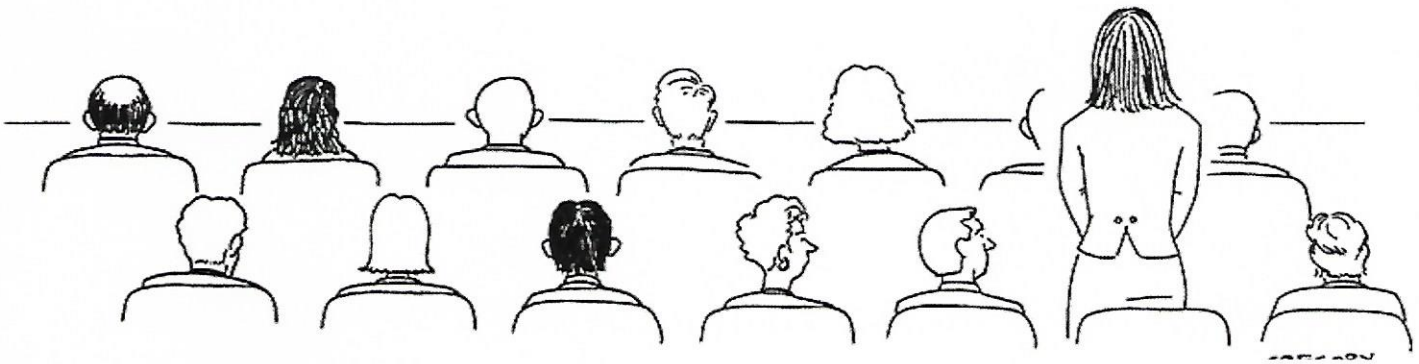

शुभ्रा रंजन

SHUBHRA RANJAN
Always Ahead

# INDEX


| क्र. सं | | पृष्ठ क्र |
|---|---|---|
| 1 | विचारधारा | 1-2 |
| 2 | उदारवाद | 3-13 |
| 3 | मार्क्सवाद | 14-20 |
| 4 | समाजवाद | 21-30 |
| 5 | नारीवाद | 31-41 |
| 6 | बहुल संस्कृतिवाद | 43-47 |
| 7 | इतिहास का अंत | 48-51 |
| 8 | शक्ति की अवधारणा | 52-58 |
| 9 | राज्य का सिद्धांत | 59-85 |
| 10 | रॉल्स का न्याय का सिद्धांत | 86-119 |
| 11 | समानता | 120-121 |
| 12 | प्रजातंत्र (Democracy) | 122-138 |
| 13 | अधिकार के सिद्धांत | 139-150 |
| 12 | राजनीति विज्ञान का परिचय | 151-163 |
| 12 | सभ्यता का संघर्ष | 164-172 |
| 12 | नागरिकता | 173-174 |

# विचारधारा

## विचारधारा क्या है

विचारधारा कि एक व्यक्ति के विचारों या विश्वासों का समूह होता है। यह राजनीतिक संदर्भों को बताने का प्रयास करती है जो देश एवं काल के समाज एवं संस्कृति की विशेषता को बताती है अर्थात यह नियमों की संहिता होती है।

विचारधारा क्यों :– यह आधुनिक राजनीति की आवश्यकता है।

↓

मताधिकार का प्रसार

↓

अतः लोगों को राजनीतिक प्रक्रिया से जोड़ने के लिए विचारधारा की आवश्यकता होती है। मध्यकाल में धर्म को विचारधारा कहा जा सकता है। आधुनिक काल में प्रबोधन के परिणामस्वरूप धर्म का स्थान, धर्म–निरपेक्ष विचारधाराओं नें ग्रहण किया जैसे–उदारवाद, समाजवाद।

वास्तव में विचारधारा और धर्म का राजनीतिक संदर्भ में कोई खास अंतर नही रहता। विचारधारा को ''धर्मनिरपेक्ष धर्म'' (Secular Religion) कह सकते हैं।

## पश्चिम में राजनीतिक दर्शन/विचारधारा का विकास

प्राचीन यूनान –

↓

आदर्शवाद → प्लेटो

आदर्शवादियों की मूल मान्यताएँः–

1. विचार ही वास्तविक हैं।
2. विचारों को तर्क के माध्यम से समझा जाता है। अर्थात विवेक के माध्यम से सत्य को समझना (बुद्धिवाद)
3. आदर्श (Perfection) की संकल्पना।

एक विचारधारा के रूप में आदर्शवादी –

1.मनुष्य को नैतिक प्राणी मानते हैं। अर्थात सामाजिक प्राणी अतः मनुष्य की तुलना में समाज को प्राथमिकता।